SEMESTER – IV

(Development of Indian Theater)

EC – 02

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content 01

- Unit – II : Topic
  - A. **औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच**

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

औपनिवेशिक एवं आधुनिक रंगमंच

रंगमंच

आधुनिक भारतीय रंगमंच का प्रारंभ अंग्रेजों के भारत आगमन के पश्चात् होता है। अंग्रेजों ने ही भारत के प्रमुख व्यापारिक नगरों जैसे कलकत्ता, बम्बई, सूरत, मद्रास में अपने मनोरंजन हेतु थियेटरों की स्थापना की थी। डेवडेफ ने जो रूसी मूल के थे, कलकत्ता में बंगाली थियेटर नामक नाट्यशाला की स्थापना की। 21 नवंबर, 1765 ई0 को लव इज दि बेस्ट डॉक्टर तथा डिसगाइज नामक नाटकों का प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन लोगों को इतना पसंद आया कि लोगों ने अपने घरों एवं बगीचों में थियेटर बनाकर नाटकों का प्रदर्शन प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् कई थियेटरों की स्थापना हुई तथा नाटकों का प्रदर्शन किया गया।

जनता में नाटकों के प्रति अत्यधिक रूचि अत्यधिक रूचि होने के कारण नाटकों का व्यावसायीकरण भी हुआ। अतः थियेट्रिकल कंपनियॉ गठित हुईं जिनमें पारसी थियेटर सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। इन कंपनियों द्वारा विभिन्न प्रदेशों में नाटकों का मंचन किया गया जिससे जनता में नाटकों के प्रति अत्यधिक रूचि उत्पन्न हुई। यद्यपि इन कंपनियों का प्रमुख उद्देश्य पैसा कमाना ही था और इस कारण नाटकलेखन में उत्कृष्टता एवं रंगप्रस्तुति के प्रयोग–दोनों को ही प्रोत्साहन न मिल सका, फिर भी इन्होंने नाटकों को लोकप्रिय बनाने में अमूल्य योगदान दिया।

आधुनिक भारतीय रंगमंच प्रारंभ में परंपरागत ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों पर नाटक लिखे गए परंतु कालांतर में इसमें अनेक

परिवर्तन हुए तथा भारतीय रंगमंच में संस्कृत नाट्य शैली एवं लोकनाट्य शैलियॉ विकसित हुईं। विभिन्न नाट्य कर्मियों जैसे बादल सरकार, शंभुमित्र, विजय तेंदुलकर, उत्पल दत्त, इब्राहीम अलकाजी, गिरीश कर्नाड, बी.वी. कारंत इत्यादि ने न केवल नाट्य प्रस्तुति में वरन् रंगविधान में भी कई नए प्रयोग किए। सत्तर के दशक के बाद नाट्य परंपरा में नया परिवर्तन तब आया जब नाटकों को प्रेक्षागृह से मुक्त कर गलियों और नुक्कड़ों पर ले जाया गया। यह रंगमंच के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव था।

आधुनिक भारतीय रंगमंच

आधुनिक भारतीय रंगमंच के इतिहास में पारसी रंगमंच की भी देन है। बम्बई (अब मुंबई) के विकासशील आधुनिक भारतीय रंगमंच के तो वे अग्रदूत हैं। हम आधुनिक भारतीय रंगमंचों की रूपरेखा निम्न प्रकार प्रस्तुत कर रहे हैं।

पारसी रंगमंख – भारत के पश्चिमी समुद्रतटीय क्षेत्रों में जो लोग फारस से आकर बसे, उन्हें पारसी के नाम से जाना जाता है। ये लोग मूलतः व्यापारी थे तथा इनका व्यावसायिक केंद्र मुंबई था। प्रारंभ में जब बंबई थियेटर की 1776 ई0 में स्थापना हुई तब मात्र अंग्रेजी नाटकों का ही मंचन होता था तथा अंग्रेज सैनिक ही थियेटर जाया करते थे। सन् 1835 ई0 को सर जमशेदजी जीजी भाई ने इस बम्बई थियेटर को खरीद लिया परंतु दुर्भाग्यवश यह थियेटर बंद कर दिया गया। तत्पश्चात् जगन्नाथ सेठ ने 1846 ई0 में बम्बई में थियेटर प्रारम्भ किया। यद्यपि शुरूआत में मात्र अंग्रेजी नाटकों का ही मंचन होता था परंतु बाद में वहॉ

गुजराती, मराठी और हिंदी, उर्दू नाटकों को भी मंचन होने लगा। बंबई थियेटर के ड्रेस बॉक्स के चारों ओर बड़ी दीर्घा होती थी। बॉक्स में 75 व्यक्ति बैठ सकते थे। गैलरी में 200 तथा पिट में 65 दर्शक बैठ सकते थे। कुल मिलाकर प्रेक्षागृह में 337 दर्शकों के बैठने की व्यवस्था थी। ड्रेस बाक्स की दर 8 रूपये और तीन रूपये गैलरी की दर रखी गई थी। प्रथम बार 1821 ई0 में भारतीयों को थियेटर देखने का मौका मिला। बम्बई में ''पारसी ड्रामेटिक कोर'' का जन्म हुआ जिसमें रूस्तम जबोली और सोहराब नाम से गुजराती नाटक खेले गये। सन् 1854 ई0 में पारसी थियेटर में तीखे खां नाम से एक प्रहसन खेला गया जो हिंदुस्तानी भाषा में था। कालांतर में सभी भाषाओं में नाटक मंचित होने लगे।

सन् 1853 में पारसी नाटकमंडली की स्थापना हुई जिसके संस्थापक पेस्टनजी घनजी भाई मास्टर थे। ये इस मंडली में अभिनय भी करते थे। इसके पश्चात पारसी थियेटिकल कमेटी के नाम से एक अन्य नाटकमंडली की स्थापना हुई। इस नाटकमंडली के मुख्य नाटककार जहांगीर नशेनजी पटेल एवं वामनजी कावसजी थे। जहांगीर पटेल का हास्य नाटक फाकड़ो फीतुरी एवं कावसजी के भोली गुल, बागे बहिश्त, वापना श्राप, नूर नेकी वफा में जफा, देलजंग दिलेर लोकप्रिय नाटक थे।

सन् 1890 ई0 तक विक्टोरिया नाटकमंडली सहित कई नाटक मंडलियों की स्थापना हुई जिनमें कुछ व्यावसायिक तथा कुछ अव्यावसायिक थीं। नाटक निर्देशक की देखरेख में पर्याप्त रिहर्सलों के पश्चात ही किए जाते थे। पारसी थियेटर की लोकप्रियता बहुत बढ़ती जा रही थी। इससे कई प्रेक्षागृह निर्मित हुए जिनमें इरॉस थियेटर, एडवर्ड

थियेटर, एम्पायर थियेटर, एलफिस्टन थियेटर, ऑरिजिनल थियेटर, नॉवल्टी थियेटर, रॉयल ऑपरा हाउस, विक्टोरिया थियेटर, हिंदी नाट्यशाला आदि प्रमुख हैं। पारसी थियेटर जिस समय प्रारम्भ हुआ उस समय अधिकांश नाटककार पारसी ही थे जैसे फरेदून, लवकुश, जमशेद, कावसजी, केखुसरो नवरोजजी, नंबीसी एदलजी, जमशेदजी खोरी रूस्तन अने सोहराब, जहमवाद अने ठगनवाद, खुदाबख्श, नूरजेहान, हीरजी, खंबाता ''आबे इक्लीस'' जहांगीर खंबाता खुदादाद धरती कंप आदि। पारसी नाटक मंडलियों में अब्बासअली नैंरगे सितम, शमशीर महमूद मियां बनारसी रौनक, हुसैन मियां जरीफ, नारायण प्रसार बेताब, मेंहदी हसन आदि कुछ ऐसे प्रसिद्ध नाटककार हैं जिन्होंने उर्दू–हिन्दी नाटक लिखे।

प्रारंभ में फारस (ईरान) की कथाओं को पारसी थियेटर का विषय बनाया गया था, परंतु जब इसकी लोकप्रियता बढ़ गई तब ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों पर भी नाटक मंचित होने लगे। पारसी थियेटरों में शास्त्रीय संगीत ही प्रयुक्त होता रहा है जैसे ठुमरी, दादरा, झिंझोटी आदि। पारसी थियेटर के प्रमुख संगीतकार नशरवन जी आबख्त्यार, अल्लादिया मेहरबान, मास्टर झंडेखां और मास्टर लाल थे। पारसी थियेटर में इंदर सभा नाटक जिसे सैयद आगा हसन ने लिखा था अत्यंत लोकप्रिय हुआ और इसका प्रभाव आगामी नाटकों पर भी पड़ा। इस नाटक का अनुवाद देश–विदेश की भाषाओं में भी हुआ। देव, परी, इंदर और शहजादों के रूमानी किस्से और उनका नाटकीय प्रदर्शन इंदर सभा का प्रमुख विषय था। इंदर सभा से प्रभावित नाटकों की विशेषता यह थी कि ये सभी

नाटक कविताबद्ध थे। इनकी भाषा उर्दू मिश्रित होती थी। तिलस्म और जादू–परक नाटकों ने जनता को आकर्षित किया।

संदर्भ– सूची

1. अर्जुन घोष, ए हिस्ट्री आफ जावा नाट्यमंच, 2012, सागा पब्लिकेशन इण्डियन, नई दिल्ली
2. भरत, नाट्यशास्त्र नेशनल बुक, ऑफ इंडिया, दिल्ली